विस्थापित परिवार एवं सामाजिक–सांस्कृतिक प्रस्थिति

वीरेन्द्र सिंह,

शोध छात्र समाजशास्त्र विभाग,
राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है। आज भी भारत मे 65.07 फीसदी आबादी गाँवों में निवास करती है। शेष 34. 93 प्रतिशत आबादी शहरों में निवास करती है। गाँवों में अधिकतर लोग कृषि कार्य को महत्व देते है। कृषि पर ही उनका जीवन निर्भर करता है और उनकी जीविका का साधन मुख्य रूप से कृषि होती है। गाँवों में लोग कृषि में तरह तरह की फसलों का उत्पादन जैसे– चावल, गेहूँ, मक्का, दालें व सब्जियाँ उगाकर अपनी जीविका ग्रहण करते है। कृषि कार्यों को करने के लिये ये लोग कृषि औजार, खाद् व बीजों को खेतों में उगाकर अनाज पैदा कर उसकी पैदावार को ध्यान में रखते हैं। समय–समय पर पानी व कीटनाशक दवाईयों का छिड़काव भी करते हैं। साथ में गाँवों में अधिकतर ग्रामीण व्यक्ति व्यावसायिक कार्यों, लघु–कुटीर उद्योग धन्धों को भी करते हैं। व्यावसायिक कार्यों में हस्तकला, लकड़ी के औजार, लौहे के औजारों का निर्माण भी करते हैं। जिससे उन्हें "धन" की प्राप्ति होती है। आर्थिक रूप से धन अर्जन करने के लिये छोटे–छोटे व्यवसाय भी करते हैं। जैसे– पशुपालन, मुर्गीपालन, बकरीपालन, मधुमक्खी व मत्स्य पालन का कार्य जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ और मजबूत हो सके। पशुपालन के कार्य में वे अपने पशुओं का दूध डेयरियों में बेचकर धन कमाते हैं। मुर्गी पालन से अंडे व मांस को बेचकर धन अर्जित करते हैं। कृषि के साथ उन्हें रोजगार भी प्राप्त होते हैं। गाँव के अधिकतर ग्रामीण व्यक्ति बहुत ही कष्टप्रद जीवन भी यापन करते हैं। उन्हें कार्यों को करने के साथ सुख–सुविधाऐं प्राप्त न होने से व्यापार में लाभ के स्थान पर हानि भी उठानी पड़ती है।

कृषि पर निर्भर जीवन होने पर कई बार उन्हें कुदरत की मार को भी झेलना पड़ता है। जैसे– वर्षा, ओलावृष्टि, आँधी, तूफान आदि के कारण फसलों को नुकसान हो जाता है और उनकी बोई गयी फसल नष्ट हो जाती है। कई बार तो किसान फसलों को बोने के बाद पानी की कमी से सुखे की मार को भी झेलते हैं। भारत में अधिकांश किसान फसलों के नुकसान को सहन नहीं कर पाते हैं और आत्महत्या भी कर लेते हैं जिससे परिवार के परिवार उजड़ जाते हैं। किसानों को फसलों को काटने तक काफी अधिक मात्रा में नुकसान भी उठाना पड़ता है।

मूल अवधारणाएं : *परिवार, सामाजिक, आर्थिक, विस्थापित।*

ग्रामीण परिवारों में कृषि को अधिक महत्व दिया जाता है। कृषि पर ही ग्रामीण जीवन पूर्ण रूप से निर्भर करता है। विस्थापन के बाद विस्थापित परिवार जो कि ग्रामीण स्तर पर निवासित हैं, उनका जीवन कृषि व व्यावसायिक रूप से बहुत ही कठिन व दूभर होता है। उसका मुख्य कारण

ग्रामीण क्षेत्रों मे सामने आते है। जैसे– शिक्षा का अभाव, आवास सुविधा का पूर्ण होना, चिकित्सा व स्वास्थ्य सुविधा का अभाव, बिजली, पानी, सड़कों का अभाव, अन्धविश्वास तथा अज्ञानता का होना है। ग्रामीण परिवारों में गाँव के लोग यदि किसी भी व्यवसाय को करते हैं तो उन्हें पूर्व व्यवसाय से सम्बन्धित जानकारी का अभाव होता है जिसके कारण उन्हें आज भी पूरा नुकसान उठाना पड़ता है। गाँवों मे आज भी आर्थिक व व्यावसायिक स्तर पर पूर्ण विकास नहीं हो पा रहा है। जिसके परिणाम शीघ्र आते हैं। विस्थापित परिवार नैनीताल के तराई क्षेत्रों में भी अधिकतर कृषि और छोटे–छोटे व्यवसाय से जुड़े हैं। जिससे उनकी पारिवारिक जीविका का अर्जन करने के साधन है। ग्रामीण व्यक्ति कृषि से आर्थिक जीवन को सुदृढ़ बनाते हैं और छोटे–छोटे व्यवसाय कर अपना जीवन यापन करने के साधन जुटाते हैं और परिवार की स्थिति सुधरती है।

दूबे के अनुसार,– "किसानों को अपनी भूमि और अपने पशुओं से भारी लगाव होता है। कठिनाई के समय यदि कृषक को अपना खेत या गाय बैल बेचने पड़े तो वह दिन उस परिवार के लिए सबसे अधिक शोक का दिन होता है। किसान इस कार्य को बहुत भारी मन से करता है। कई दिन तक परिवार में उदासी छायी रहती है और घर की स्त्रियां कई दिन तक दुखी दिखाई देती है। भारतीय कृषक भूमि को अपनी 'माँ' के समकक्ष मानते हैं और भूमि को छोड़ना उसके लिये ठीक वैसा ही है जैसा कि अपनी 'माँ' से बिछड़ना।"[1]

ग्रामीण व्यक्ति अपनी कृषि, परिवार तथा जानवरों के प्रति बहुत ही लगाव रखते हैं। कृषि पर उनका पूर्ण जीवन निर्भर करता है। ग्रामीण स्तर पर किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति बहुत उच्च तथा बहुत निम्न होती है। परन्तु आज के समय में ऐसा नहीं होता है। वर्तमान समय में ग्रामीण–स्तर पर रोजगार के साधन उपलब्ध होने की वजह से निम्न आय कम लोगों की दिखाई देती है। ग्रामीण व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए कृषि के साथ छोट–छोटे व्यवसाय करते हैं जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हो और उन्हें रोजगार प्राप्त हो।

ग्रामीण व्यवसाय, व्यवसाय का एक ऐसा धन्धा है, जिसमें धन के बदले वस्तुओं अथवा सेवाओं का उत्पादन, विक्रय और विनिमय होता है। व्यवसाय में उन सभी क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जिसमें वस्तुओं के उत्पादन से लेकर वितरण की क्रियाऐं की जाती हैं। व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए धन प्राप्त करना होता है।

मैल्विन ऐलन के अनुसार– "व्यवसाय जीविकोपार्जन का तरीका होता है। जिसमें मानवीय क्रियाऐं आ जाती है। जो वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन एवं वितरण के लिए की जाती है।"[2]

किंग्सले डेविस के मतानुसार– "व्यवसाय शब्द का अर्थ विस्तृत रूप में निजी एवं सार्वजनिक दोनों ही संस्थाओं को सम्बोधित करता है जो कि एक समय में आर्थिक मूल्यों का विकास तथा प्रविधिकरण होता है।"[3]

उद्देश्य – प्रस्तुत प्रपत्र का उद्देश्य विस्थापित परिवारों की सामाजिक, आर्थिक प्रास्थिति का अध्ययन करना है।

समग्र एवं अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन का समग्र रामनगर ब्लाक है। इस विकासखण्ड में 53 ग्राम सभाएं हैं। इनमें से ग्राम प्रतापपुर एवं ग्राम मानपुर का अध्ययन किया गया है। ग्राम प्रतापपुर में 297 तथा ग्राम मानपुर में 209 विस्थापित परिवार हैं, जो पौड़ी गढ़वाल के कोटद्वार तहसील से विथापित होकर रामनगर विकास खण्ड के इन ग्रामों में प्रवासित हैं। कुल 501 विथापित परिवारों में से 50 प्रतिशत परिवारों

का चयन नियमित अंकन प्रणाली द्वारा चयन कर अध्ययन को मूर्त रूप प्रदान किया गया। विस्थापित परिवारों के मुखिया को अध्ययन की इकाई माना गया। तथ्यों का संकलन साक्षात्कार–अनुसूची द्वारा किया गया साथ ही द्वैतीयक तथ्यों का भी प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

गांवों में व्यक्तियों द्वारा छोटे–छोटे व्यवसाय किये जाते हैं। व्यवसाय का मूल उद्देश्य धन प्राप्त करना होता है। गाँव के छोटे व्यवसाय निम्न होते हैं जैसे– जनरल मर्चेन्ट की दुकान, काश्तकारी, बढ़ईगिरी, मसाले व आटे की चक्की व फल सब्जियों की दुकानें आदि। इस तरह के व्यवसाय से गाँव वालों को रोजमर्रा की वस्तुएं प्राप्त होती हैं और वह अपनी जरूरत की सामग्री गाँव में ही ले लेते हैं। उन्हें शहरों में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

आर्थिक स्थिति का विवरण

विस्थापित परिवारों में विस्थापन के बाद उत्तरदाताओं के परिवारों की स्थिति में सुधार आया और उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति को आय के साधनों से काफी सुदृढ़ किया है। निम्न सारणी में उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–1
उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति का विवरण

क्र0स0	विवरण (उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सुदृढ़	165	66
2.	बहुत सुदृढ़	55	22
3.	निम्न	30	12
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि 66 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–165 है, की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ है। 22 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–55 है, उनकी आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ है। शेष 12 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–30 है, आर्थिक स्थिति आज भी निम्न है।

आर्थिक वृद्धि का विवरण

वर्तमान समय की सबसे महत्वपूर्ण समस्या भी आर्थिक विकास है। साथ ही सबसे बड़ी आवश्यकता भी, जिनके बिना किसी भी प्रकार की सामाजिक वृद्धि न्यून नजर आती है। विस्थापन ने उनके आर्थिक निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निम्न सारणी में आर्थिक वृद्धि के विवरण को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–2
उत्तरदाताओं के परिवार में आर्थिक वृद्धि का विवरण

क्र0स0	विवरण (परिवार में आर्थिक वृद्धि)	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	175	70
2	नहीं	33	13
3.	अनिश्चित	42	17
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–2 से स्पष्ट है कि 70 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–175 है, के परिवार में आर्थिक स्थिति में वृद्धि हुई है जबकि 13 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–33 है, परिवार की आर्थिक स्थिति में कोई वृद्धि नहीं है जबकि शेष 17 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–42 है, आर्थिक विकास की वृद्धि में अनिश्चित दिखे।

मकानों की स्थिति का विवरण

सभी व्यक्तियों की मुख्य मूलभूत तीन प्रमुख आवश्यकता मानी गयी है– रोटी, कपड़ा और मकान। जिसमें पेट भरने के लिये रोटी, पहनने के लिये कपड़ा और रहने के लिये मकान का होना बहुत जरूरी है। व्यक्ति अपनी बचत से मकान बनाता है जो उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। यदि व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है तो स्वयं का मकान होगा यदि नहीं तो उसके पास स्वयं मकान का नहीं होगा। निम्न सारणी में मकानों की स्थिति का विवरण दिया गया है।

सारणी संख्या–3
उत्तरदाताओं के मकानों की स्थिति का विवरण

क्र0स0	विवरण (मकानों की स्थिति)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पैतृक बना हुआ है।	10	04
2.	स्वयं बनाया है।	235	94
3.	किराए का है।	05	02
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–3 से स्पष्ट हुआ है कि 04 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–10 है, का मकान पैतृक बना हुआ है। 94 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–235 है, का मकान स्वयं का बनाया है। 02 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–05 है किराऐ के मकान में रह रहे हैं। पैतृक मकान दादा तीसरी पीढ़ी का बना है।

मकानों का आकार की स्थिति का विवरण

गाँवों में अधिकतर पुराने समय में झोपड़ी हुआ करती थी, परन्तु वर्तमान समय में आज गाँवों में ज्यादातर मकान पक्के दिखायी देते हैं। मकानों का आकार भी ग्रामीणवासी की आर्थिक स्थिति को दिखाता है। निम्न सारणी में उत्तरदाताओं के

मकानों के आकार की स्थिति का विवरण दिया गया है।

सारणी संख्या–4

उत्तरदाताओं के मकानों कें आकार का विवरण

क्र0स0	विवरण (मकानों का आकार)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पक्का	227	91
2.	अर्द्धपक्का	23	09
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–4 से स्पष्ट है कि 91 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 227 है, जिनके मकानों का आकार पक्का है उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है। 09 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–23 है, के मकानों का आकार अर्द्धपक्का है। उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं है।

ऋण लेने की सुविधा का विवरण

विस्थापन के बाद विस्थापित परिवारों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये ऋण लेना पड़ जाता है। जिससे अपने पारिवारिक जीवन के कार्यों को किया जा सके बैंकों से ऋण मिलने का कोई ऐसा सशक्त साधन नहीं है। खेती या कृषि भूमि पर बैंको से ऋण उपलब्ध नहीं हो सकता क्योंकि जमीनों की रजिस्ट्री (पक्की नाम) पर नहीं है। इसलिये ग्रामीणों को अपने रिश्तेदारों व साहूकारों से ऋण लेना पड़ता है।

सारणी संख्या–5

उत्तरदाताओं को ऋण लेने की सुविधा का विवरण

क्र0स0	विवरण (ऋण लेने की सुविधा)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	बैंकों से	–	–
2.	रिश्तेदारों से	220	88
3.	साहूकारों से	30	12
	कुल योग	**225**	**100**

निम्न सारणी संख्या–5 से स्पष्ट है कि 88 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–220 है, ने अपने रिश्तेदारों से ऋण लिया है। 12 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–30 है, ने साहूकारों से ऋण लिया है। बैंक से ऋण ग्रहण करने वालों में शून्य प्रतिशत उत्तरदाता है। बैंक से उनको ऋण बिल्कुल भी प्राप्त नहीं है।

आर्थिक रूप से जीवन स्तर का विवरण

विस्थापन के बाद गाँव वालों के जीवन स्तर में बदलाव आया या नहीं, जीवन जो वह जी रहे हैं उसका स्तर बदल रहा है या नहीं। आर्थिक रूप से जीवन स्तर में खान–पान व रहन–सहन में बदलाव आया है या नहीं। निम्न सारणी में आर्थिक रूप से जीवन स्तर को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–6

उत्तरदाताओं का आर्थिक रूप से जीवन स्तर का विवरण

क्र0स0	विवरण (आर्थिक रूप से जीवन स्तर)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	210	84
2.	नहीं	40	16
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–6 से स्पष्ट है कि 84 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–210 है, उनका आर्थिक रूप से जीवन–स्तर विस्थापन के बाद उठा है। जबकि 16 प्रतिशत उत्तरदाता जिसकी संख्या–40 है, उनके जीवन–स्तर में आर्थिक रूप से बदलाव नहीं आया है।

ऋण लेने के कारण का विवरण

कोई भी व्यक्ति किसी से भी ऋण नहीं लेता परन्तु किसी जरूरी आवश्यकता के कारण व्यक्ति को मजबूरी में ऋण लेना पड़ता है। मनुष्य को अपनी आवश्यक कार्यों को पूरा करने के लिये ऋण जैसे– शादी–विवाह, बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित कार्यों को करने, मकान, इलाज व व्यापार को चलाने के लिये लेना पड़ता है। निम्न सारणी मे ऋण लेने के कारण का विवरण दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–7

उत्तरदाताओं के ऋण लेने के कारण का विवरण

क्र0स0	विवरण (ऋण लेने के कारण)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	शादी विवाह के लिए	75	30
2.	शिक्षा से सम्बन्धित कार्यों के लिए	38	15
3.	मकान बनाने के लिए	87	35
4.	इलाज के लिए	25	10
5.	व्यापार के लिए	25	10
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–7 से स्पष्ट है कि 35 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–87 है, ने स्वयं का मकान बनाने के लिए ऋण लिया है। 15 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–38 है, ने बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित कार्यों के लिये ऋण लिया है तथा 30 प्रतिशत ने शादी और 10, 10 प्रतिशत ने इलाज व व्यापार के लिए ऋण लिया है।

नौकरी के अवसर के पक्ष में

गांवों में अधिकतर लोगों का मुख्य कार्य कृषि है। फिर भी विस्थापन के बाद कृषि के साथ नौकरी

करने के लिए गाँव के युवाओं में जोश देखा गया है। ग्रामीण आज कृषि के साथ नौकरी के पक्ष में दिखाई दे रहे हैं और नौकरी पाने के अवसरों को खोना नहीं चाहते हैं। निम्न सारणी में नौकरी के अवसरों के पक्षों को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–8

उत्तरदाताओं द्वारा नौकरी के अवसर का विवरण

क्र0स0	विवरण (नौकरी के अवसर)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	240	96
2.	नहीं	10	04
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–8 से स्पष्ट है कि 96 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–240 है, नौकरी के अवसर के पक्ष में हैं जबकि 04 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–10 है, वह नौकरी के अवसरों के पक्ष में नहीं है। इसका कारण कृषि कार्यों को प्रमुखता देना है।

परिवार में उपयोगी वस्तुओं का विवरण

विस्थापन के बाद आर्थिक स्थिति में वृद्धि हुई है। उससे घरों की उपयोगी वस्तुओं की खरीदारी हुई है। जिससे उनका जीवन आरामदायक हुआ है। जिसे निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–9

उत्तरदाताओं के परिवार मे उपयोगी वस्तुओं का विवरण

क्र0स0	विवरण (उत्तरदाताओं के परिवार में उपयोगी वस्तुओं)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	टी0वी0	62	25
2.	फ्रिज/कूलर	50	20
3.	मोटर साइकिल	112	45
4.	कार	12	05
5.	अन्य	14	05
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–9 से स्पष्ट है कि 25 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–62 है, के घरों में उपयोगी साधन टी0वी0 है। 20 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या 50 है, के घरों में फ्रिज/कूलर है। 45 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–112 है, के घरों में मोटर साइकिल है जबकि 05, 05 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घरों में उपयोगी साधन कार व अन्य साधन भी है।

आर्थिक वृद्धि के कारण रहन–सहन में बदलाव की स्थिति का विवरण

विस्थापित परिवारों में विस्थापन के बाद आर्थिक वृद्धि होने के कारण रहन–सहन में आज के

समय में बदलाव आया है। आर्थिक व्यवस्था में होने वाला परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख कारक है। ग्रामीण लोगों में यदि आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है तो उनका रहन–सहन का स्तर भी अच्छा है। निम्न सारणी में रहन–सहन के स्तर के बारे में बताया गया है।

सारणी संख्या–10

उत्तरदाताओं की आर्थिक वृद्धि के कारण रहन–सहन में बदलाव की स्थिति का विवरण

क्र0स0	विवरण (आर्थिक वृद्धि के कारण रहन सहन में बदलाव की स्थिति)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	रहन–सहन में परिवर्तन आया	223	89
2.	रहन–सहन में परिवर्तन नही आया	17	07
3.	कोई उत्तर नहीं	10	04
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–10 से स्पष्ट है कि 89 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–223 है, के रहन–सहन में परिवर्तन उच्च रहा है। 07 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–17 है, के रहन–सहन में परिवर्तन नहीं आया अन्य शेष 07 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–10 है, ने रहन–सहन के बारे में कोई उत्तर नहीं दिया।

परम्परागत व्यवसाय का विवरण

कोटद्वार तहसील के कार्बेट रेन्ज के वन ग्राम से विस्थापित परिवार जो कि नैनीताल के तराई क्षेत्र झिरना में आये उनके विस्थापन के बाद परम्परागत व्यवसाय में परिवर्तन आया या नहीं। विस्थापित व्यक्ति आज भी परम्परागत व्यवसाय से ज्यादा जुड़े हैं। निम्न सारणी में परम्परागत व्यवसाय का विवरण दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–11

उत्तरदाताओं का परम्परागत व्यवसाय का विवरण

क्र0स0	विवरण (उत्तरदाताओं का परम्परागत व्यवसाय)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	परम्परागत व्यवसाय करते हैं	220	88
2.	परम्परागत व्यवसाय नहीं करते हैं	20	08
3.	अन्य व्यवसाय	10	04
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–11 से स्पष्ट है कि 88 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–220 है उन्होने अपना परम्परागत कृषि व्यवसाय को नहीं छोड़ा है। 08 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–20 है, विस्थापन के बाद परम्परागत व्यवसाय नहीं करते हैं जबकि 04 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–10 है, अन्य व्यवसाय करते हैं।

आर्थिक क्षति का विवरण

विस्थापन के बाद विस्थापित परिवारों में आर्थिक वृद्धि के साथ कुछ प्रतिशत आर्थिक क्षति भी हुई

है। उसका मूल कारण विस्थापन से पूर्व उनके आवास, व्यवसाय, रोजगार से सम्बन्धित आर्थिक क्षति को निम्न सारणी से दर्शाया गया।

सारणी संख्या–12

उत्तरदाताओं की आर्थिक क्षति का विवरण

क्र0स0	विवरण (उत्तरदाताओं की आर्थिक क्षति)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	आर्थिक क्षति हुई	75	30
2.	आर्थिक क्षति नहीं हुई	175	70
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–12 से स्पष्ट है कि 30 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–75 है, जिन्हें विस्थापन के बाद आर्थिक क्षति हुई है। जबकि 70 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–175 है, जिन्हें विस्थापन के बाद बहुत कम आर्थिक क्षति हुई है।

परिवारों का आर्थिक संचालन

परिवार का आर्थिक संचालन परिवार के मुखिया का कार्य होता है। मुखिया के बाद जिम्मेदार सदस्य की जिम्मेदारी परिवार का संचालन करना होता है। निम्न सारणी में परिवार के आर्थिक संचालन को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–13

उत्तरदाताओं के परिवारों का आर्थिक संचालन का विवरण

क्र0स0	विवरण (उत्तरदाताओं के परिवारों का आर्थिक संचालन)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पति के द्वारा	25	10
2.	पति–पत्नी के द्वारा	137	55
3.	सास–ससुर के द्वारा	75	30
4.	अन्य	13	05
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–13 से स्पष्ट है कि 10 प्रतिशत उत्तरदाता के परिवार का आर्थिक संचालन पति (मुखिया) द्वारा किया जाता है। 55 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–137 है, पति–पत्नी दोनों परिवार का आर्थिक संचालन करते हैं। 30 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–75 है, सास ससुर के द्वारा परिवार का संचालन किया जाता है। जबकि शेष 05 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य के द्वारा परिवार का संचालन करते हैं।

व्यवसाय की स्थिति का विवरण

विस्थापन के बाद गाँववासियों ने कृषि कार्य के साथ छोटे व्यवसायिक कार्य को करना शुरू किया जिससे रोजगार बढ़ा और बैरोजगारी दूर हो सकी, व्यवसाय करने का मुख्य कारण धन कमाना था, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके, निम्न सारणी में व्यवसाय की स्थिति को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–14

उत्तरदाताओं के व्यवसाय की स्थिति का विवरण

क्र0स0	विवरण (व्यवसाय की स्थिति)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अच्छी	149	60
2.	बहुत अच्छी	60	24
3.	खराब	41	16
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–14 से स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–149 है, उनके व्यवसाय की स्थिति अच्छी है। 16 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–41 है, उनके व्यवसाय की स्थिति खराब है, जबकि 24 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–60 है, उनके व्यवसाय की स्थिति बहुत अच्छी है।

व्यवसाय के आकार का विवरण

गाँवों में लोगों का व्यवसाय छोटे–छोटे कई बार बड़े व्यवसाय भी देखने को मिलते हैं। छोटे व्यवसाय से भी ग्रामीण लोगों को लाभ प्राप्त होता है। निम्न सारणी में ग्रामीण व्यवसाय को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–15

उत्तरदाताओं के व्यवसाय के आकार का विवरण

क्र0स0	विवरण (व्यवसाय का आकार)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	व्यवसाय का आकार बड़ा	69	28
2.	व्यवसाय का आकार छोटा	181	72
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–15 से स्पष्ट है किया गया है कि ग्रामीण लोग आज भी गांव में व्यवसाय करते है। 72 प्रतिशत उत्तरदाताओं जिनकी आवृत्ति संख्या–181 है, उनके व्यवसाय का आकार छोटा है। 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं जिनकी आवृत्ति संख्या–69 है, उनके व्यवसाय का आकार बड़ा है।

उत्तरदाताओं के व्यवसाय का विवरण

वर्तमान समय में मंहगाई अधिक होने के कारण तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ग्रामीण युवा, पुरूष भी रोजगार ढूढंते हैं। कई बार वह स्वयं ही घर पर छोटे–छोटे व्यवसाय शुरू करते हैं। निम्न सारणी मे उत्तरदाताओं का व्यवसाय को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–16

उत्तरदाताओं के व्यवसाय का विवरण

क्र0स0	विवरण (उत्तरदाताओं के व्यवसाय)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	जनरल मर्चेन्ट की दुकान	15	06
2.	फल, सब्जी की दुकान	10	04
3.	पशुपालन	116	47
4.	बढ़ईगिरी	12	05
5.	काश्तकारी	86	34
6.	अन्य	05	02
7.	कुछ नहीं	06	02
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–16 से स्पष्ट है कि 06 प्रतिशत उत्तरदाताओं जिनकी आवृत्ति संख्या–15 है, गाँव में जनरल मर्चेन्ट की दुकान चलाते हैं। 04 प्रतिशत उत्तरदाताओं जिनकी आवृत्ति संख्या–10 है, फल व सब्जियों की दुकान करते हैं। 47 प्रतिशत जिनकी आवृत्ति संख्या–116 है, पशुपालन का फार्म (बकरी, मुर्गीपालन व गाय भैंस) करते हैं। 05 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–12 है, बढ़ईगिरी करते हैं। 34 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–86 है, काश्तकारी का कार्य करते हैं। 02 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–05 है, अन्य कार्य करते हैं। 02 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–06 है, कुछ कार्य नहीं करते है।

व्यावसायिक बचत का विवरण

किसी भी व्यवसाय को करने का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। व्यवसाय से जो लाभ प्राप्त होता है। वही व्यवसाय की बचत, व्यावसायिक बचत कहलाता है। निम्न सारणी में व्यावसायिक बचत का विवरण दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–17

व्यावसायिक बचत का विवरण

क्र0स0	विवरण (व्यावसायिक बचत)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	185	74
2.	नहीं	38	15
3.	अनिश्चित	27	11
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–17 से स्पष्ट है कि 74 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–185 है, उन्हे अपने व्यवसाय से व्यावसायिक बचत हुई है। 15 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–38 है, को व्यवसाय से व्यावसायिक बचत नहीं हुई जबकि 11 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–27 है, वह अपने व्यवसाय से व्यावसायिक बचत के बारे में अनिश्चित हैं।

सरकार द्वारा व्यवसाय में मदद का विवरण

विस्थापित परिवारों में बहुत से लोगो ने स्व व्यवसाय को अपनाया है। विस्थापन के बाद रोजगार के लिये अपना छोटा व्यवसाय शुरू किया लेकिन सरकार द्वारा व्यवसाय में मदद बहुत कम उपलब्ध हो सकी, निम्न सारणी में व्यवसाय में मदद को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–18

उत्तरदाताओं को सरकार द्वारा व्यवसाय मे मदद का विवरण

क्र0स0	विवरण (सरकार द्वारा व्यवसाय में मदद)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	10	04
2.	नहीं	240	96
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–18 से स्पष्ट है कि 04 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–10 है, को सरकार द्वारा व्यवसाय में मदद प्राप्त हुई जबकि 96 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–240 है, का कहना है कि सरकार द्वारा व्यवसाय में कोई भी मदद नहीं की गई है जिन्होंने स्वयं का व्यवसाय शुरू किया है।

व्यवसाय में बैंक से लोन सुविधा का विवरण

विस्थापन के बाद विस्थापित परिवारों के व्यक्तियों द्वारा यदि कोई व्यवसाय शुरू करने के लिये उन्हे सरकार के द्वारा लोन सुविधा उपलब्ध नहीं हुई। बिना लोन के कोई भी व्यवसाय शुरू नहीं किया जाता है। निम्न सारणी में व्यवसाय के लिये बैंक से लोन सुविधा का विवरण दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–19

उत्तरदाताओं के व्यवसाय में बैंक से लॉन सुविधा का विवरण

क्र0स0	विवरण (व्यवसाय में बैंक से लॉन सुविधा)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	10	04
2.	नहीं	235	94
3.	अनिश्चित	05	02
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–19 से स्पष्ट है कि 04 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–10 है, का कहना है कि व्यवसाय में बैंक लोन सुविधा हमें अपनी सरकारी नौकरी के आधार पर प्राप्त है। कृषि भूमि पर लोन नहीं प्राप्त है क्योंकि जमीन, मकान की रजिस्ट्री नहीं है। 94 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–235 है, को बैक से लोन की सुविधा नहीं मिली है। जबकि 02 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–05 है, बैंक लोन की सुविधा के बारे में अनिश्चित है।

विस्थापित परिवारों की जमीन की रजिस्ट्री (खाता–खतौनी) का विवरण–

विस्थापित परिवारों को कोटद्वार तहसील जिला पौड़ी गढ़वाल से सत्ताईस साल पहले विस्थापित किया गया यह ग्राम जिम कार्बेट (जंगल) के अन्तर्गत आता था। जिससे मनुष्य व फसलों को जगंली जानवरों से नुकसान उठाना पड़ता था और किसी प्रकार की सुविधा ना होने के कारण इन्हें वहाँ से हटाकर नैनीताल जनपद के तराई क्षेत्रों (गांवों) में विस्थापित किया गया। आज भी इनकी जमीनों की रजिस्ट्री (खाता–खतौनी) नहीं हो पायी जिससे इनको किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं मिल पा रही है। निम्न सारणी में विस्थापितों की जमीन रजिस्ट्री को दर्शाया गया है।

सारणी संख्या–20

उत्तरदाताओं के जमीन (रजिस्ट्री) का विवरण

क्र0स0	विवरण (जमीन रजिस्ट्री)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	–	–
2.	नहीं	250	100
	कुल योग	**250**	**100**

उक्त सारणी संख्या–20 से स्पष्ट है कि विस्थापित परिवारों का विस्थापन के बाद भी जमीन (रजिस्टर्ड) उनके नाम पर नहीं हुई 100 उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या 250 है, उनका आज भी यही कहना है कि जमीन उनके नाम पर नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की आर्थिक, व्यवसाय की समस्याओं के अध्ययन को दर्शाया गया है। साक्षात्कार से ज्ञात होता है कि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है और आर्थिक वृद्धि भी विस्थापन के बाद हुई है। अधिकांश उत्तरदाताओं के मकान स्वयं के हैं तथा उनका आकार पक्का है। अधिकांश उत्तरदाताओं की जमीन की रजिस्ट्री न होने के कारण ऋण लेने की सुविधा बैंक से उपलब्ध नहीं है। ग्रामीण वासियों ने कृषि से ही अपने जीवन–स्तर में सुधार किया है। बहुत से ग्रामीणों को रिश्तेदारों व साहूकारों से शादी, विवाह, शिक्षा, इलाज व व्यापार के लिये ऋण लेना पड़ता है। जिससे वह अपने घरेलू कार्यों को पूर्ण करते हैं। अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकांश उत्तरदाता आज के समयानुसार नौकरी के पक्ष में है और कृषि कार्यों मे भी रहते हैं। विस्थापन के बाद विस्थापित परिवारों में उत्तरदाताओं के परिवारों में उत्तरदाताओं के परिवार, घरों में उपयोगी वस्तुओं में वृद्धि हुई है जिससे उनका जीवन आरामदायक हुआ है। जिससे उनके रहन–सहन में भी बदलाव आया है। उनकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होने के कारण यह सब सम्भव हुआ है। 59–68 आयु वर्ग, सारणी संख्या–3, मकानों की स्थिति में ज्यादातर 94 प्रतिशत स्वयं के द्वारा बनाये गये मकान हैं जबकि 04 प्रतिशत पैतृक यानि दादा के द्वारा बनाये गये मकान हैं। आज भी विस्थापित परिवारों में परम्परागत व्यवसाय (कृषि) कार्य को अपनाया है। वह कृषि में खेतीबाड़ी, गेहू, चावल, दाल व साग–सब्जियों को उगाते हैं और उनकी पैदावार करते हैं। सारणी संख्या–12 मे उत्तरदाताओं को विस्थापन के बाद आर्थिक क्षति भी हुई है। जिसमें 30 प्रतिशत लोगों को फसलों से सम्बन्धित आर्थिक क्षति को सहन करना पड़ा है। सारणी संख्या–13 से ज्ञात होता है। कि 59–68 आयु वर्ग में परिवार के संचालन का कार्य अधिकांश मुखिया दादा या पति के द्वारा किया जाता है। परिवारों में पति–पत्नी के द्वारा परिवार का

संचालन होता है। गांवों में आज भी कृषि व्यवसाय के साथ छोटे व्यवसायिक कार्य भी किये जाते हैं। व्यवसायिक कार्यों की स्थिति अच्छी है। जिनसे उनका पारिवारिक जीवन सही रूप से चलता है। व्यवसाय का आकार ग्रामीण स्तर पर छोटा होता है। उनका व्यवसायिक कार्य जैसे– जरनल मर्चेन्ट की दुकान, फल व सब्जी की दुकानें, पशुपालन, बढ़ईगिरी व काश्तकारी से सम्बन्धित होती है। जिससे जीवोकोपार्जन का कार्य करते हैं। सारणी संख्या–17 में व्यवसायिक बचत अधिकांश उत्तरदाता की 74 प्रतिशत हुई है। सारणी संख्या–18 से ज्ञात होता है कि 59–68 आयु वर्ग के उत्तरदाताओं को सरकार द्वारा विस्थापन करने के बाद विस्थापित परिवारों में लोगों को किसी भी प्रकार की व्यवसाय से सम्बन्धित मदद नही की गई। न ही बैंक से लोन लेने की सुविधा उपलब्ध है। उसका मुख्य कारण गढ़वाल के पौढ़ी जनपद से विस्थापन कुमाऊँ के नैनीताल जनपद में जमीन की न तो रजिस्ट्री हुई है न ही इनके नाम पर खाता खतौनी है। जिससे सभी सरकारी कार्यों में इन्हें असुविधा का सामना करना पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्यामाचरण दूबे, एक भारतीय गांव (अनु, योगेश अटल) पृष्ठ–74
2. Andre Beteille, studies in Agrariane social structure, Page-78
3. Basu and Bhattacharya, Land Reform in West Bengal
4. Andre Betille, op.cit; P-77